कूप की रचना के लिए नियम

कूप प्राय: मानव निर्मित होता है। अपने आवास, बस्ती, कृषिक्षेत्र के आसपास कूप की आवश्यकता मानी गई है। सिंधु-हड़प्पा आदि सभ्यताओं में घरेलू कूपों की रचना मिली है। कूप प्रधानतया जलस्रोत हैं लेकिन यथावश्यकता घास या अनाजभरण के काम में भी लिए गए हैं। इस प्रकार कूप प्रधान रूप से चार प्रकार के होते हैं-

गिरिकूप : पर्वतों पर खोदे गए कुएं जो धातु आदि निकालने से बनते जाते हैं, अरावली क्षेत्र में खदानों को अभिलेखों में गिरिकूप ही कहा गया है,

क्षेत्रकूप : खेतों में सिंचाई आदि के प्रयोजन से बनाए गए खेतखाड़

पनकूप : ये पनघट वाले कूप भी कहे जाते हैं और प्राय: बस्तियों के ईशान कोण में अथवा किसी नदी, नाले के तट पर खोदकर बनाए जाते हैं।

अन्य कूप : सूखे हुए वे कुएं जिनकी रचना कोठी के रूप में होती है और जिनमें घास, पूस अथवा अनाज आदि भरा जाता है।

गुप्तकाल तक यह मान्यता गांव-गांव महत्व पा चुकी थी कि कूप बस्तियों में कहां खुदवाए जाएं। इस काल तक कूप घरों से बाहर ही खुदवाए जाने लगे थे। वराहमिहिर के संकेत से इस बात की जानकारी मिलती है कि ग्राम या पुर के आग्नेय कोण (पूर्व-दक्षिण), नैर्ग त्य कोण (दक्षिण-पश्चिम) और वायव्य कोण (पश्चिम-उत्तर) में कूप नहीं खुदवाएं। अन्य दिशाओं- पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण और ईशान कोण (उत्तर-पूर्व) में कूप खुदवाना शुभ माना गया। यही मान्यता महाराणा प्रताप के काल तक भी रही, उस काल में लिखित विश्ववल्लभ में यह मत मिलता है।

वराहमिहिर के काल तक कूप आयताकार भी बनते थे, संभवत: वे पाली कहे जाते थे। ये दो प्रकार के बनते थे : पूर्व-पश्चिमायत और दक्षिण-उत्तरायत। तब तक यह जान लिया गया था कि पूर्व-पश्चिमायत कूप में अधिक समय तक जल ठहरता है और दूसरे प्रकार के कूप में जल नहीं ठहरता है, कारण यह है कि वायु के झोंकों से वह निर्मिति नष्ट हो जाती है। यदि दक्षिणोत्तर वाला ही निर्माण करना हो तो उसके किनारों को मजबूत लकड़ी से बांधे या पत्थर आदि चुनवाने चाहिए। जब बनाया जाए तब मिट्टी की हरेक तह को हाथी आदि घुमाकर रुंदवाना चाहिए ताकि मिट्टी दबकर विशेष रूप से सुदृढ़ हो जाए।

इस प्रकार उस काल में कूप को गहराई से ही लकड़ी और पत्थर आदि का प्रयोग कर मजबूत बनाया जाने लगा था और यह परंपरा बहुत काल तक व्यवहार में रही। कूप, वापी, पौखरी के आसपास मजबूती और जलशिराओं के आकर्षण के लिए निचुल, जामुन, वेंत, नीप जैसे वृक्षों के साथ ही अर्जुन, बरगद, आम, पिलखन, कदंब और बकुल, कुरबक, ताल, अशोक, महुआ, मौलसिरी आदि को लगाया जाता था। जलस्रोत के साथ इस प्रकार के नियमों का पालन बहुत काल तक होता रहा है।

जल शुद्धि के लिए द्रव्य निक्षेप

कूप आदि में जल नियमित रूप से शुद्ध रहे, इसके लिए ग्रामीणों, प्रशासकों और राजागणों द्वारा अनेक द्रव्यों को डाला जाता था। बृहत्संहिता, अग्निपुराण,